ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका ने दिया अवसर,
अब आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर
(पृष्ठ – 02)

योजना से जुड़कर
सीता का सपना हुआ साकार
(पृष्ठ – 03)

संघर्ष, साहस, और
दृढ़ता की मिसाल बनी
पूनम दीदी
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – नवम्बर 2024 ।। अंक – 40

महिलाओं के स्वावलंबन की सीढ़ी बनी सतत् जीविकोपार्जन योजना

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार सरकार द्वारा चलाई जा रही एक लोक कल्याणकारी योजना है, जिसका उद्देश्य अत्यंत गरीब और समाज के मुख्यधारा में जुड़ाव से वंचित परिवारों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता प्रदान करना है। इस योजना के तहत अत्यंत गरीब परिवारों को वित्तीय और सामाजिक सुरक्षा देने के साथ–साथ उन्हें विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में शामिल किया जाता है ताकि वे स्वरोजगार के स्थायी साधनों से जुड़ सकें और गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें। यह योजना गरीबी उन्मूलन और स्वावलंबन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

योजना का उद्देश्य और कार्यान्वयन :

सतत् जीविकोपार्जन योजना का प्रमुख उद्देश्य समाज के सबसे गरीब परिवारों को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें गरीबी से बाहर निकालने के लिए स्थायी जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराना है। यह योजना विशेष रूप से उन परिवारों को लक्षित करती है, जो अत्यंत गरीब हैं और जिन्हें अन्य सरकारी योजनाओं का पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाया है। इस योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल करने हेतु सहयोग प्रदान किया जाता है।

इस योजना का क्रियान्वयन ग्रामीण विकास विभाग द्वारा जीविका के माध्यम से किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में जीविका महिला ग्राम संगठनों के माध्यम से योजना से जुड़ाव हेतु योग्य परिवारों की पहचान करते हुए उन्हें चिह्नित किया जाता है। ग्राम संगठन के अनुमोदन के पश्चात ऐसे परिवारों को सतत् जीविकोपार्जन योजना अन्तर्गत चरणबद्ध तरीके से लाभान्वित किया जाता है। लाभार्थी परिवारों के क्षमता निर्माण हेतु जीविका द्वारा उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है एवं उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ने हेतु योजना के तहत वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं।

योजना अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है :–

1. **प्रशिक्षण एवं कौशल विकास –** योजना के अंतर्गत लाभार्थी परिवारों को रोजगार के नए अवसरों और व्यवसायिक गतिविधियों से जुड़ने तथा इसके कुशल संचालन हेतु उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। यह प्रशिक्षण उन्हें सूक्ष्म उद्यम, व्यवसाय, कृषि, पशुपालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, बागवानी, सिलाई–कढ़ाई, खाद्य प्रसंस्करण आदि क्षेत्रों में काम करने हेतु सक्षम बनाता है।

2. **वित्तीय सहायता –** लाभार्थी परिवारों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए स्वरोजगार से जोड़ा जाता है। इसके लिए योजना अंतर्गत उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इससे लाभार्थियों को छोटे व्यवसाय शुरू करने या अपने पारंपरिक व्यवसाय को बढ़ाने में मदद मिलती है। इसमें जीविकोपार्जन निवेश निधि, विशेष निवेश निधि और जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि शामिल है।

3. **मार्केट लिंकेज और समर्थन –** योजना के तहत लाभार्थियों को बाजार से जोड़ने और उनके उत्पादों को बेचने में मदद दी जाती है। इससे उनका व्यवसाय बढ़ता है और उनकी आय में स्थिरता आती है। जीविका समूहों के माध्यम से इनके उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य पर बेचा जाता है, जिससे वे सीधे लाभान्वित होते हैं।

इस योजना से गरीब परिवारों को कई प्रकार के लाभ प्राप्त हो रहे हैं :–

- **आत्मनिर्भरता :** इस योजना से लाभान्वित परिवार की जीवन–यापन हेतु दूसरों पर निर्भरता कम हुई है। उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर मिला है और वे स्वावलंबन की ओर अग्रसर हुए हैं।

- **आर्थिक स्थिरता :** योजना से जुड़े परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। क्रमिक गति से उनकी आय में वृद्धि हो रही है। वे अपने परिवार का परवरिश करने के साथ–साथ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार लाने में सक्षम हो रहे हैं।

- **समुदाय का सशक्तिकरण :** योजना के अंतर्गत लाभान्वित महिलाओं का क्षमतावर्धन किया गया है। वे ग्राम संगठन एवं स्वयं सहायता समूह के माध्यम से संगठित हुए हैं एवं जीविकोपार्जन गतिविधि से जुड़कर आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। अपने परिवार को विकास की राह पर अग्रसर करने में वे एक सशक्त भूमिका निभाती हैं। इससे समाज को भी नई दिशा मिली है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित कई परिवारों ने गरीबी से बाहर निकलकर आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा दिये हैं। योजना की मदद से कई महिलाओं ने किराना दुकान, सब्जी दुकान, मनिहारा, बकरी पालन, गाय पालन, मुर्गी पालन, नर्सरी, बुनाई और अन्य छोटे व्यवसायों की शुरुआत की है। इन व्यवसायों से अब वे अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही हैं। इसके अलावा अन्य महिलाओं को रोजगार भी दे रही हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना न केवल आर्थिक उन्नति का माध्यम है, बल्कि यह गरीब और वंचित परिवारों के जीवन को स्थायित्व और सम्मान भी प्रदान करती है। इस योजना से लाभार्थी न सिर्फ स्वावलंबी बनते हैं, बल्कि समाज में एक सशक्त और आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में अपनी पहचान बनाते हैं।

दूर हुआ अंधेरा, जीवन में आया नया उजाला

अररिया जिले के फारबिसगंज प्रखंड के मुशहरी गांव की रहने वाली पूनम देवी का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। 16 वर्ष की उम्र में उसकी शादी उसके माँ–बाप ने एक दिव्यांग से करवा दी थी। शादी के बाद पूनम देवी को तीन लड़की और एक लड़का हुआ। परिवार का भरण–पोषण उनके परिवार के पारंपरिक पेशा देसी शराब बनाकर बेचने से होता था। राज्य में शराब बंदी लागू होने के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति ख़राब हो गयी। परिवार में आमदनी का कोई और जरिया नहीं था। जिसकी वजह से परिवार में आर्थिक तंगी बनी रहती थी। इसी बीच, पूनम के पति की तबीयत ज्यादा खराब रहने लगी। जिसकी वजह से वो काम करने में अक्षम हो गए। ऐसे में परिवार का पूरा जिम्मा पूनम पर आ गया। पूनम और उनके परिवार के यह बहुत ही कठिन दौर साबित होने लगा। मजदूरी कर पूनम ने किसी प्रकार परिवार चलाना शुरू किया। लेकिन काम हमेशा नहीं मिलने के कारण परिवार को कभी–कभी भूखे भी सोना पड़ता था।

पूनम दीदी की माली हालत को देखते हुए वर्ष 2020 में ग्राम संगठन के माध्यम से उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में किया गया। दीदी ने किराना दुकान शुरू करने के फैसला किया। इसके लिए ग्राम संगठन के माध्यम से उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई है। इसके बाद जीविकोपार्जन निवेश निधि से प्राप्त 20 हजार रुपये से ग्राम संगठन की खरीदारी समिति द्वारा किराना दुकान हेतु सामग्रियों खरीद कर उन्हें दी गई। इससे दीदी ने गुमटी लेकर किराना दुकान की शुरूआत की। शुरुआती दौर में उन्हें जीवन निर्वाह में सहयोग प्रदान करने के लिए सात माह तक हर महीने एक–एक हजार रुपये जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के रूप में दिया गया। दीदी ने अपने व्यवसाय को चलाने में काफी मेहनत की। हालांकि व्यवसाय संचालन में एमआरपी का भी निरंतर सहयोग उन्हें मिलता रहा। परिणामस्वरूप उन्होंने दुकान की परिसंपत्ति बढ़ाकर 1,14,789 रुपये कर ली है। दीदी किराना दुकान से बचत के पैसे से बकरी खरीदकर बकरी पालन और 3 गाय खरीद कर उसे पालन भी कर रही है। वर्तमान में दीदी की मासिक आमदनी 17 हजार रुपये से अधिक है। दीदी अपना मासिक बचत भी कर पा रही है। इसके अलावा दीदी अपने बच्चों को ठीक ढंग से पढ़ा पा रही है। यह योजना इनके लिए बहुत ही मददगार साबित हुई है।

जीविका ने दिया अवसर, अब आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर

रीमा दीदी बिहार के खगड़िया जिले के परबत्ता प्रखंड स्थित भरसो पंचायत की निवासी है। उनके पति महेश्वर सहनी मजदूरी करते थे, जिससे परिवार का गुजारा मुश्किल से ही हो पाता था। आर्थिक तंगी के कारण उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। उनके पास रहने के लिए सुरक्षित घर भी नहीं था। ऐसे समय में जीविका उनके लिए नई उम्मीद लेकर लाई।

जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से रीमा को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। इसके बाद जीविकोपार्जन गतिविधि से जोड़ने हेतु उन्हें सबसे पहले प्रशिक्षित करते हुए सक्षम बनाया गया एवं वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराए गए। योजना से प्राप्त सहयोग राशि से उन्होंने किराना दुकान शुरू किया, जिसमें ग्राम संगठन की दीदियों ने पूरा सहयोग प्रदान किया। रीमा दीदी के पास अब एक स्थायी व्यवसाय है। इस पहल से उन्हें अपने परिवार की स्थिति में सुधार करने का अवसर मिला। अब वह पूरी मेहनत और लगन से दुकान चला रही है। दुकान का सफलतापूर्वक संचालन करते हुए वह अच्छी आय अर्जित कर रही है। इस आमदनी से वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में सक्षम हुई है। दुकान से जुड़े कामों में उनके पति और बेटा भी मदद करते हैं। किराने की दुकान से रीमा दीदी को एक स्थिर आय का स्रोत मिला, जिससे उनकी दैनिक जरूरतें आसानी से पूरी हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अगरबत्ती निर्माण का काम भी शुरू किया है, जिससे उनकी आमदनी में इजाफा हुआ है। अगरबत्ती निर्माण से प्राप्त आय ने उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो रही है।

रीमा दीदी के जीवन में धीरे–धीरे सकारात्मक बदलाव आ रहा है। जीविका ने उन्हें न केवल वित्तीय सहायता प्रदान की है बल्कि आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी दिया है। प्रधानमंत्री आवास योजना, बिजली, नल–जल और उज्ज्वला योजना के लाभ से उनका जीवन स्तर बेहतर हुआ है। रीमा दीदी उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, जो मेहनत और लगन से अपने जीवन में बदलाव लाना चाहती हैं।

योजना से जुड़कर सीता का सपना हुआ साकार

सीता देवी मधुबनी जिला अंतर्गत खजौली प्रखंड के कन्हौली पंचायत की रहने वाली है। उनका घर कन्हौली गाँव के मलिक टोला में वार्ड नंबर– 09 में स्थित है। सीता देवी के पति डोमा शाही मजदूरी कर परिवार का जीवन–यापन करते थे। कभी–कभी मजदूरी नहीं मिलने पर दो वक्त का भोजन जुटाना भी मुश्किल हो जाता था। एक दिन अचानक डोमा बीमार हो गए, जिससे दीदी की जिम्मेदारी और बढ़ गई। दीदी को अब दूसरों के खेतों में मजदूरी करनी पड़ रही थी ताकि परिवार का पालन–पोषण और पति का इलाज करवा सकें।

सीता देवी की अत्यंत दयनीय स्थिति को देखते हुए भावना ग्राम संगठन ने सतत् जीविकोपार्जन योजना हेतु उनका चयन किया। इसके बाद योजना अन्तर्गत उन्हें आर्थिक सहयोग प्रदान करते हुए उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधि से जोड़ा गया। शुरुआती दौर में उन्हें योजना के तहत कुल 37 हजार रुपये उपलब्ध कराए गए। साथ ही साथ व्यवसाय के संचालन हेतु दीदी को प्रशिक्षित किया गया। योजना से मिली राशि से सीता देवी ने श्रृंगार की दुकान शुरू की। इसके अलावा घर पर रहकर सिलाई का काम भी कर सकें, इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया गया। सीता दीदी अब अपने घर पर श्रृंगार की दुकान चलाने के साथ–साथ सिलाई का कार्य भी करती है। सीता दीदी अब प्रतिदिन 200 से 300 रुपये कमा रही हैं। उनकी कुल संपत्ति 88,881 रुपये है। मासिक आमदनी लगभग 7,000 रुपये हो गई है। इससे उनका जीवन अब सुधर गया है।

इस योजना का लाभ लेकर दीदी का परिवार खुशहाल हुआ है। वह अपने परिवार का अच्छी तरह परवरिश कर रही है एवं बच्चों को स्कूल भेज रही है। सीता दीदी का कहना है, "मैं अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहती हूँ, इसके लिए फ्रीज लेकर दूध, दही और ठंडा बेचना चाहती हूँ। मैं अपने बच्चों को बाहर भेजकर अच्छे से पढ़ाना चाहती हूँ ताकि वह अपना भविष्य उज्ज्वल बना सके।"

समूह में जुड़ने से सकीला को मिली नई आशा और दिशा

सकीला देवी सुपौल जिले के मरौना प्रखंड की निवासी है। उनके जीवन की कहानी संघर्ष और आत्मनिर्भरता की मिसाल है। दीदी बताती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना में जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत खराब थी। उनके पति बीमार रहते थे और काम करने में असमर्थ थे, जिससे परिवार की आय का कोई स्थायी स्रोत नहीं था। इस कठिनाई के चलते दीदी को दूसरों के खेतों में मजदूरी करके अपना और बच्चों का गुजारा करना पड़ता था।

दीदी ने वर्ष 2017 में कोशी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का निर्णय लिया। यह कदम उनके जीवन के लिए महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। समूह से जुड़ने के बाद उन्हें नई आशा और दिशा मिली। इस समूह ने न केवल उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान की बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया। दीदी के परिवार की ख़राब आर्थिक स्थिति को देखते हुए वर्ष 2023 में उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत चयनित किया गया, जो उनकी मेहनत का फल था।

चयन के बाद इन्होंने योजना से मिली विशेष निवेश निधि की राशि से एक कटघरा खरीदी और जीविकोपार्जन निवेश निधि से प्राप्त 20,000 रुपये की सहायता से किराना दुकान का व्यवसाय शुरू किया। इसके अलावा उन्हें जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के रूप में 7,000 रुपये भी प्राप्त हुए, जिसने उनके व्यवसाय को स्थापित करने में मदद की।

कुछ समय बाद दीदी के पति का निधन हो गया, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और स्वयं दुकान को संभालने लगीं। इसके परिणामस्वरूप अब उनकी आमदनी में वृद्धि होने लगी है। उनके चार छोटे बच्चे हैं, जिन्हें वह स्कूल भेजती हैं और उनका अच्छे से पालन–पोषण करती हैं।

दीदी कहती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने के बाद उनके जीवन में काफी बदलाव आया है। आज उनकी मासिक आमदनी 8,000 से 10,000 रुपये हो गई है। वह बताती हैं कि इस योजना से उनके घर में खुशियां आई हैं। दीदी चाहती हैं कि अपने व्यवसाय को बढ़ाने तथा बच्चों को पढ़ाकर उन्हें बेहतर शिक्षा दे। सतत् जीविकोपार्जन योजना की वजह से आज उनके जीवन में बदलाव आया है।

संघर्ष, साहस, और दृढ़ता की मिसाल बनी पूनम दीदी

नालंदा जिला के हरनौत प्रखंड के छोटे से गाँव श्री चंदरपुर में अपने पति और दो बेटों के साथ रहने वाली पूनम देवी आज आत्मविश्वास के साथ समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। उनकी सफलता की कहानी उस समय शुरू हुई थी जब उन्होंने वर्ष 2008 में अपने पति के साथ एक सुखद और समृद्ध जीवन की आशा के साथ शादी की। उनके पति मेहनत–मज़दूरी करके अपने परिवार की ज़रूरतों को पूरा करते थे। विवाह के तीन वर्षों में उन्होंने दो बेटों को जन्म दिया। वह परिवार के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही थी। परंतु, नियति ने उनके खुशहाल जीवन को एक झटका दिया। एक दिन सुबह जब पूनम के पति छत की मरम्मत कर रहे थे, उन्हें एक गंभीर दुर्घटना का सामना करना पड़ा। गीली छत से फिसलने के कारण उनके पति की रीढ़ की हड्डी टूट गई, जिससे वह हमेशा के लिए अपाहिज हो गए। इस हादसे ने पूनम के जीवन को पूरी तरह से बदल दिया।

पति की चोट के कारण पूनम पर घर–परिवार चलाने की जिम्मेवारी आ गईं। उन्हें अपने एक साल के बच्चे को गोद में लेकर अस्पताल भागना पड़ा। लेकिन इलाज के लिए जुटाए गए पैसे की कमी के कारण उनकी स्थिति और खराब हो गई। धीरे–धीरे कर्ज बढ़ने लगा और कर्जदाता पैसे की मांग करने लगे। इस कठिनाई से निपटने के लिए पूनम को अपने घर छोड़कर रिश्तेदारों के पास शरण लेनी पड़ी, लेकिन वहाँ भी ज्यादा समय तक टिक नहीं सकीं।

हालात के खिलाफ लड़ाई जारी रखते हुए, पूनम ने अपने बच्चों के लिए कुछ काम करने का निर्णय लिया। अपने पति के बड़े भाई से थोड़े पैसे उधार लेकर उन्होंने रेडीमेड कपड़ों का व्यवसाय शुरू करने का मन बनाया। पूनम ने कपड़ों की गठरी लेकर गली–गली जाकर बेचने का निर्णय लिया। पहले प्रयास में, पूनम ने केवल 5,000 रुपये के कपड़े खरीदे और गाँव–गाँव जाकर बेचना शुरू किया।

धीर–धीरे, पूनम को अपने व्यवसाय में सफलता मिलने लगी। हालाँकि पहले के मुकाबले ज्यादा मुनाफा नहीं था, लेकिन यह उन्हें एक नई दिशा दिखा रहा था। उन्होंने अपने पति की दवाइयों के लिए पैसे जुटाना और कर्ज चुकाना शुरू किया। जब उनकी स्थिति और खराब हुई, तो पूनम ने दैनिक मजदुरी की और अपनी मेहनत से कुछ ज्यादा पैसा जोड़ना शुरू किया।

पूनम देवी की परिवार की खराब आर्थिक स्तिति को देखते हुए जीविका ग्राम संगठन द्वारा उपका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में किया गया। ग्राम संगठन से बिभिन्न किस्तों में उन्हें 64,000 रुपये की राशि प्राप्त हुई, जिससे उन्होंने अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए पूँजी जुटाई। पूनम ने इस पूंजी का उपयोग कर थोक में कपड़े खरीदने का फैसला किया। उन्होंने कोलकाता और दिल्ली से थोक में कपड़े खरीदे, जिससे उनकी आमदनी में इजाफा हुआ। इसके बाद वह एक साइकिल लेकर फेरी लगाने लगीं और अपने बेटे की पढ़ाई और पति की देखभाल के साथ–साथ अपने व्यवसाय को भी आगे बढ़ाने लगीं।

वर्तमान में पूनम देवी अपने फेरी व्यवसाय से हर महीने 8,000 से 9,000 रुपये कमा लेती है। इससे धीरे–धीरे उनके परिवार की स्थिति में सुधार हुआ है। अब वह अपनी मेहनत से अपने पैर पर खड़ी हो गई है। पूनम ने प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान कार्ड और अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ भी लिया है। उनकी मेहनत और जीविका योजना की सहायता ने उनके जीवन को नई दिशा दी है और उम्मीद की एक नई रोशनी दिखाई दे रही है। पूनम देवी की कहानी संघर्ष, साहस, और दृढ़ता की मिसाल है। उन्होंने न केवल अपने परिवार को आर्थिक रूप से मजबूत किया है, बल्कि समाज में भी एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार